inext 16-09-2016

सेंसर टेक्नोलॉजी से बढ़ेगा गन्ना उत्पादन

- जापानी व आईआईटी एक्सपर्ट ने एनएसआई के एग्री फार्म का जायजा लिया
- एनएसआई फार्म पर फरवरी में सेंसर टेक्नोलॉजी का प्रयोग

kanpur@inext.co.in

KANPUR (15 Sept): यूपी ही नहीं बल्कि नार्थ इंडिया के गन्ना किसानों के लिए सेंसर टेक्नोलॉजी डेवलप की गई है. इस टेक्नोलॉजी का यूज करके गन्ने के उत्पादन को बढ़ाया जा सकेगा. इसके साथ ही उसकी क्वालिटी भी बेहतर होगी. इस टेक्नोलॉजी का ट्रायल फरवरी में नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के फार्म पर किये जाने की तैयारी की गई है. आईआईटी के साथ मुराता जापानी कंपनी और एनएसआई मिलकर इस टेक्नोलॉजी का प्रयोग करने जा रहे हैं. इसको लेकर बीते दो दिन से जापानी टीम एनएसआई व आईआईटी में डेरा डाले हुए है.

खेती के बारे में जानकारी ली

आईआईटी कानपुर केमिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के प्रो सिद्धार्थ पांडा और जापानी कंपनी मुराता के एक्सपर्ट्स की टीम ने बीते दो दिनों से नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के फार्म हाउस पर शुगर केन की खेती के बारे में जानकारी हासिल की थी. मुराता कंपनी के ताकाशी शिमजू डीएम वेंकटेशन के साथ प्रो पांडा व एनएसआई के डायरेक्टर प्रो नरेन्द्र मोहन, डॉ. संतोष कुमार, डॉ. लोकेश बाबर और विनय कुमार के बीच विस्तार से टेक्नोलॉजी पर चर्चा की गई.

PIC: I NEXT

गन्ने की फसल की जांच करती एक्सपर्ट्स की टीम.

> आईआईटी के नेशनल सेंटर फॉर फ्लेक्सिबल इलेक्ट्रानिक्स, मुराता जापानी कंपनी के साथ एनएसआई मिलकर सेंसर टेक्नोलॉजी पर फरवरी से काम शुरू कर देगा. टेक्नोलॉजी से किसान प्रोडक्शन के साथ गुणवत्ता पर फोकस कर सकेंगे.'
> - प्रो नरेन्द्र मोहन, डायरेक्टर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी

कंट्रोल रूम को देगा जानकारी

फसल में जैसे ही कोई कीड़ा एक्टिव मोड में आएगा या पत्ती पर कहीं कोई स्पॉट आएगा तो सेंसर उसे सेंस करके कंट्रोल रूम को जानकारी दे देगा. साथ ही सेंसर ये भी बताएगा कि खेत में पानी और फर्टिलाइजर की कब जरूरत पड़ेगी. इंडिया में जो प्रोडक्शन है उसमें नार्थ व साउथ इंडिया में काफी डिफरेंस है. नार्थ इंडिया में जहां उत्पादन 50 से 70 टन प्रति हेक्टेयर मिलता है वहीं दक्षिण भारत में 80 से 110 टन प्रति हेक्टेयर शुगर केन का उत्पादन मिल रहा है. यही नहीं चीनी की रिकवरी में दोनों एरिया में अंतर है. नार्थ इंडिया में जहां 9.5 से 10 वहीं साउथ इंडिया में 11.5 से 12 परसेंट की रिकवरी होती है.

हिन्दुस्तान 16-09-2016

आईआईटीके-मुराता मैन्युफैक्चरिंग जापान के सेंसर का ट्रायल

सेंसर से बढ़ाई जाएगी अब गन्ने की पैदावार

तकनीक

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

गन्ने की पैदावार अब सेंसर से बढ़ाई जाएगी। इसकी शुरुआत राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने कर दी है। इसके लिए आईआईटी कानपुर व मुराता मैन्युफैक्चरिंग क्योटो जापान की ओर से तैयार स्मार्ट एग्रीकल्चर सेंसर का ट्रायल होगा। ट्रायल का रिजल्ट मार्च तक आ जाएगा।

गन्ने की खेती को बढ़ाने के लिए अब राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, आईआईटी कानपुर के नेशनल सेंटर फॉर फ्लेक्सबल इलेक्ट्रानिक्स और मुराता मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड क्योटो जापान ने हाथ मिलाया है। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि आईआईटी कानपुर के डॉ. सिद्धार्थ पांडा और क्योटो कंपनी के ताकाशी शिमिजु और डीएम वेंकटेशन ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के फॉर्म का निरीक्षण किया है। सभी ने मिलकर तैयार किए गए सेंसर का गन्ने की खेती में उपयोग को देखा है। सेंसर का प्रयोग मिट्टी की गुणवत्ता जांचने में किया जा सकेगा। इससे मिट्टी में जरूरत के अनुसार खाद और सिंचाई के पानी का प्रयोग किया जा सके।

गुरुवार को मुराता मैन्युफैक्चरिंग क्योटा जापान की टीम ने फसल देखी। • हिन्दुस्तान

अमर उजाला 16-09-2016

सेंसर से जांची जाएगी मिट्टी की गुणवत्ता

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर।

गन्ने का प्रोडक्शन बढ़ाने में आईआईटी कानपुर और जापान की मुर्था मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड क्योटो जापान ने नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) से हाथ मिलाया है। ऐसा सेंसर विकसित करने का भरोसा दिलाया है, जिसकी मदद से गन्ने की फसलों में लगने वाले रोग, कीट की पहचान की जा सकेगी। रोकथाम करके प्रोडक्शन बढ़ाया जा सकेगा। गन्ना की पत्तियों पर सेंसर की टेस्टिंग भी की गई है।

नेशनल सेंटर फॉर फ्लेक्सिबल इलेक्ट्रानिक्स आईआईटी कानपुर के प्रो. देवाशीष पांडा और जापान की कंपनी के ताकाशी शिनुजु और डीएम वेंकटेशन गुरुवार को एनएसआई पहुंचे। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन से मुलाकात की और स्टूडेंट फार्म हाउस जाकर गन्ने की गुणवत्ता देखी। विज्ञानियों ने कहा कि गन्ने का प्रोडक्शन बढ़ाने के उद्देश्य से सेंसर विकसित किया जा रहा है। इसके जरिये मिट्टी की गुणवत्ता जांची जा सकेगी। पहले ही पता लगाया जा सकेगा कि खाद, बीज और पानी (सिंचाई) की कितनी जरूरत है।

यह सेंसर एक चिप के रूप में होगा। मिट्टी में रखकर गुणवत्ता जांची जा सकेगी। इसमें सफलता मिली तो गन्ना की पैदावार बढ़ जाएगी। उत्तर भारत में प्रति हेक्टेयर खेत में गन्ना प्रोडक्शन 50-70 टन है। दक्षिण भारत में यही आंकड़ा 80-110 टन प्रति हेक्टेयर है। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि यह तकनीक कारगर साबित हो सकती है। इस मौके पर डॉ. संतोष कुमार, डॉ. लोकेश बाबर, डॉ. बीपी श्रीवास्तव और डॉ. विनय कुमार मौजूद रहे।

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में जांच करते जापान की कंपनी के ताकाशी शिनुजु।